जनजातीय किशोरियों में परिधानों के प्रति जागरूकता और क्रय शैली पर विभिन्न संचार माध्यमों का प्रभाव।

{राँची तथा सिमडेगा जिला के विशेष संदर्भ में।}

गृह विज्ञान (सामाजिक विज्ञान सकाय) राँची विश्वविद्यालय, राँची में

पीएच.डी. उपाधि निबंधन के लिए प्रस्तुत शोध प्रारूप

शोध निर्देशिका:

डॉ. रेशमा खलखो

एसोसिएट प्रोफेसर

गृह विज्ञान विभाग

राँची विश्वविद्यालय,राँची

अन्वेषिका:

संगीता बरला

प्रस्तावना–

शिक्षा, विज्ञान और नई तकनीकों के प्रचार प्रसार के पश्चात् मनुष्य के जीवन में कई बदलाव आए। मनुष्य के रहन–सहन, बोल–चाल की भाषा, खान–पान, कपड़े पहनने के तौर तरीकों में तथा संचार के साधनों में समय के साथ कई परिवर्तन आए। शिक्षा ने लोगों को सभ्य बनाया और विज्ञान से जोड़ा और विज्ञान ने लोगों को नई तकनीके दी और संचार के साधन दिए। जो लोगों को एक जगह से दूसरे जगह जोड़ता है।

शिक्षा और संचार की सुविधा प्राप्त करने के पश्चात् आदिवासी समाज के सामाजिक–आर्थिका और मनोवैज्ञानिक सोच में कई बदलाव आए है। शिक्षा और संचार मीडिया ने इन्हें समाज के अन्य लोगों से जोडा। कॉलेज जाने वाली जनजातीय किशोरियाँ अपने गैर जनजातीय सहपाठियों के प्रभाव में आकर उनके रहन–सहन, कपड़े पहनने के तौर तरीकों को अपनाने लगी। साथ ही बाजार में खरीदारी करने के तरीकों को सीखा। आज के नए दौर में मास मीडिया, फैशनेबल कपड़ों के उपयोग और खरीदारी के लिए जिम्मेदार साबित हो रही है। आज इंटरनेट कनेक्शन और फैशन पर अच्छी नजर रखने वाला कोई भी व्यक्ति पथ प्रर्दशक बन सकता है। संचार ने अपने विभिन्न रूपों में कुछ वर्षों में फैशन के प्रति रूझानों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। टेलीविजन विज्ञापनों से लेकर चमकदार पत्रिकाओं और सोशल मीडिया मंच तक संचार मीडिया की पहूंच दूर–दूर तक है और फैशन उद्योग में इसके प्रभाव को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं। पिछले 50 वर्षों में प्रोद्योगिकी विकास के साथ मीडिया का प्रभाव तेजी से बढ़ा है, पहले टेलिग्राफ, फिर रेडियो, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, टेलिविजन और अब इंटरनेट। हम एक ऐसे समाज में रहते हैं जो सही दिशा में आगे बढने और दैनिक गतिविधियों जैसे काम, मनोरंजन, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा, व्यक्तिगत रिश्ते, यात्रा और अन्य सभी चीजों को करने के लिए सूचना और संचार पर निर्भर करता है।

झारखण्ड के जनजाति& झारखण्ड में 32 जनजातियाँ निवास करती है। झारखण्ड के जनजातियों का पहनावा बहुत साधरण व सरल होता हैं। इनके द्वारा कम–दाम, सस्ते, सूती वस्त्रों का प्रयोग करना आम बात है। परंपरागत कपडे "करेया"–"परेया"–"खनेरिया" का प्रयोग पहले की अपेक्षा अब न के बराबर होता है। पुरुष प्रायः धोती, गंजी तथा गमछा का प्रयोग करते हैं। बाहर या बाजार जाते समय धोती–कुर्त्ता, पैंट–कमीज पहन लेते है। कुछ सर पर पगडी भी बांधते। महिलाएं प्रायः साडी, ब्लाउज पहनती है। घर में तो ये केवल साडी पहनती हैं तथा उसी से ऊपरी अंग को भी ढकती हैं। इनका दाया कंधा उधरा रहता है, जो श्रमण व संस्कृति के प्रभाव को र्दशाता है। परंतु अब आधुनिकता के प्रभाव में आ कर और शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् महिलाएं साडी–ब्लाऊज, सलवार–जम्फर पहनती है, कुछ महिलाएं घर में नाईटी का भी प्रयोग करती है। बच्चे पैंट–गंजी पहनते और बच्चियां पैंट, फ्रॉक पहनती है। किशोरियाँ सलवार–जम्फर, स्कर्ट–कमीज, फ्रॉक, साया, पेटिकोट, ब्लाऊज, ब्रेसरी आदि पहनती है। पढे–लिखे शहरी लोग अधुनिक परिधाना पैंट, कमीज, कोट, टाई व मोजा का प्रयोग करते है। पैरों में जूता व चप्पल का प्रयोग अब धडल्ले से हो रहा हैं।

साहित्य समीक्षा–

- गाओ 2023– आज की दुनिया में लोग ढेर सारे मीडिया प्लेटफार्मों से घिरे हुए हैं। जो लोगों का कुछ सेकेड़ में जानकारी स्वीकर करने की अनुमति देते हैं। टेलीविजन और पत्रिकाओं से लेकर सोशल मीडिया और लेख तक, जनसंचार माध्यम दैनिक जीवन के हर पहलू में व्याप्त हो गया है। जनसंचार माध्यम फैशन प्रवृत्तियों और उपभोक्ता व्यवहार को आकार देने में

महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि इसमें नए डिजाइन प्रदशित करने और फैशन रूझानों को ऊंचा उठाने की क्षमता है, लेकिन यह हानिकारक रूढिवादिता और अत्यधिक खपत में भी योगदान दे सकता है। संचार माध्यम ने फैशन उद्योग को आकार देने के विभिन्न तरीकों की खोज करके, लोग संस्कृतिक मूल्यों, सामाजिक मानदंडों और पयावर्रणीय प्रथाओं पर इसके प्रभाव की गहरी समझ प्राप्त कर सकते हैं। इंटरनेट, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्रम और लिंक्डन जैसे सोशल मीडिया मंच व्यवसायों के लिए अपने लक्षित दर्शकों से जुड़ने के कुछ सबसे प्रभावी उपकरण है।

गाओ की शोध ''नए मीड़िया के परिप्रेक्ष्य से फैशन ट्रेंड के विकास पर मास मीड़िया के प्रभाव पर शोध'' पर हाल के वर्षों में सोशल मीडिया ने नए प्रकार के प्रभावशाली व्यक्ति को जन्म दिया है जिसे राय नेता (केओएल) के रूप में जाना जाता है फैशन बाजार में केओएल का उपयोग हाल के वर्षो में तेजी से लोकप्रिया हो गया है, ब्रांड इंस्टाग्रम और टिकटॉक जैसे सोशल मीडिया मंच पर अपने उत्पादों को बढवा देने के लिए बडे लोगों के साथ साझेदारी कर रहे है।

- हसन, फाहीम और रहमान 2023–''मुल्तान क्षेत्र में विश्वविद्यालयों में छात्रों के बीच कपड़ों के रूझानों के संबंध में फैशन के प्रति जागरूक ग्रहको के झुकाव, रिश्ते और खरीदारी के इरादे पर सोशल मीडिया बजार का प्रभाव'' के अनुसार सोनिया हसन कहती हैं, कि युवा खरीदारों के बीच ड्रेस डिजाइन पैटर्न के बारे में विश्वासनीय डेटा के लिए रूचि बढ़ रही है और वेब आधारित सोशल मीडिया नेटवर्किंग ग्राहकों और ब्रांडों के साथ जुडने की क्षमता के कारण ऑनलइन नेटवर्किंग एक मूल्यावान उपकरण हो सकता है। फैशन उद्योग में सोश्ल मीडिया ऐसा है कि ब्रांडों के बीच यह संचार इसी धारणा से उत्पन्न होता है।

  ऑनलइन नेटवर्किंग पारंपरिक मीडिया के लिए विशिष्ट है। आंकड़ा ऑनलइन और डाक द्वारा एकत्र किया गया था। शोध खोजपूर्ण और वर्णनात्मक हैं। मुल्तान क्षेत्र पकिस्तान में सोशल मीडिया का प्रयोग पुरूष और महिलाएं दोनों समान रूप से करता हैं।
- सरकार 2019– सरकार ने ''21वी सदी की आदिवासी महिलाओं की 20 पोशाक प्राथमिकताएँ: भारत के त्रिपुरा की आदिवासी महिलाओं की पोशाक में परिवर्तन का अध्ययन'' पर शोध किया। युवा पीढी नई संस्कृति और पहनावे के नए तरीकों के प्रति खुली विचार रखते हैं। वे समकालीन, पारंपरिक पोशाक, अन्य भारतीय और पश्चिमी पोशाक पहनते है। युवा, महिलाएं कपडों के मामले में अधिक प्रयोगात्मक होती है। आदिवासी महिलाएँ आदिवासी पोशाक पहनना पसंद करती है, लेकिन दैनिक पहनावे के लिए वे पश्चिमी कपड़े पहनते है। शोध में शहरी और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में आदिवासी महिलाओं की कपड़ों की पसंद का अध्ययन करने के लिए 100 त्रिपुरी महिलाओं और 100 रियांग महिलाओं के बीच सर्वेक्षण किया गया।
- मोगरा और जैन 2018– डॉली मोगरा और जैन ने ''उदयपुर उपक्षेत्र की आदिवासी महिलाओं का पोशाक शैली'' पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान में शोध किया है। डॉली मोगरा के अनुसार आदिवासी महिलाओं में अपने कपड़ों का भंडारण प्रथाओं में कौशल की कमी है, पोशाक को सही तरीके से रखने के लिए कम अनुभव, ज्ञान और संसाधन हैं। शोध में आंकडा संग्रह और विश्लेषण तकनीक के लिए साक्षत्कार अनुसूची और अनौपचारिक चर्चाओं का उपयोग करके आंकडा संग्रह किया गया है। उत्तरदाताओं की उम्र 30 से 60 वर्ष के बीच की थी।
- पाल और ऊइकी 2017– जीवन शैली जीवन प्रथाओं और अधिक सटीक रूप से व्यक्तिगत और सामूहिक व्यवहार का प्रतीक है। यह किसी व्यक्ति, समूह या संस्कृति की रूचि, राय,

व्यवहार दृष्टिकोण और मूल्यों को दर्शाता है। हर कोई खूबश्सूरत और परफेक्ट दिखना चाहता है, चाहे पुराना समय हो या वर्त्तमान समय, फैशन हमेशा किसी के जीवन और व्यक्तित्वा में शामिल रहा है और वे नए–नए तरीकों की तलाश में लगे रहते हैं, कि वे नए फैशन की शुरूआत करे। संस्कृति को अपनाने या संशोधित करने की प्रक्रिया रेडियो, टेलीविजन, फैशन शो, इंटरनेट, समाजिक वेबसाइट, समाचार पत्र, बैनर, होर्डिग से शुरू होती है।

पल और ऊइकी ने अपनी शोध ''मीडिया और जीवनशैलीः ड्रेसिंग स्टाइल पर मीडिया के प्रभाव का एक अध्ययन'' एमिटी स्कूल ऑफ कम्यूपिकेशन, एमिटी यूनिवर्सिटी, मध्य प्रदेश। अध्ययन प्रथमिक और द्वितीयक संग्रह के साथ किया गया है। जनसंख्यिकी प्रोफाइल में जनसंख्यिकी का प्रतिनिधित्व प्रतिवादी द्वारा दर्ज की गई प्रतिक्रिया के अनुसार दिखाया गया था। लिंग के अनुसार 58.1% महिलाएं 41.9% पुरूष थे। 90.6% उत्तरदाताओं की उम्र 18–24, 9.4% उत्तरदाताओं की उम्र 25–31 थी।

- मियाँ 2017– ''आदिवासियों पर सोशल मीडिया का प्रभाव'' रिसर्च स्कॉलर, गौरबंग यूनिवर्सिटी, मालदा, पश्चिम बंगाल, भारत। मिया ने शोध में कहा, कि सोशल मीडिया का नवीनतम रूप है और इसमें कई विशेषताएँ हैं। इसमें एक ही चैनल पर कई सुविधाएं हैं जैसे संचार करना, संदेश भेजना, चित्र साझा करना, ऑडियो और वीडियो साझा करना, तेजी से प्रकाशन, पूरी दुनिया से जुड़ना और सीधे जुड़ना। सोशल मीडिया लोगों की जीवन शैली को प्रभावित कर रहा है। आदिवासी युवा और उनकी जीवन शैली रूझान सोशल मीडिया की ओर बढने लगे है।
- कांबले, मालागटि और पाटिल 2016– ''जनजातियों के सामाजिक मुद्दे और जनसंचार माध्यमों की भूमिका'' शोध में इन्होंने आदिवासियों की पिछले 60 वर्षों के दौरान की स्थति, संविधान और जनजातीय शिक्षा, मास मीडिया और सामाजिक परिवर्तन और मास मीडिया की भूमिका पर विचार प्रस्तुत किया गया है। जनसंचार माध्यमों का प्रभाव पारंपरिक मीडिया पर भी पड़ता है। प्रिंट मीडिया जैसे साइनबोर्ड, बिलबोर्ड आदि का उपयोग आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में लोकप्रिय रूप से किया जाता है। संदेशा संप्रेषित करने के लिए लोग मोबाइल संचार, इंटरनेट और सोशल मीडिया का भी उपयोग करते हैं। आधुनिक संबोधन प्रणाली तेजी से पारंपरिक साधनों की जगह ले रही है।
- शर्मा 2016– शर्मा का यह शोध ''डिजिटल माध्यम से आदिवासी युवाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव'' आदिवासी युवाओं पर सोशल मीडिया के प्रभाव और उत्तर पूर्व भारत के विशेष संदर्भ में आदिवासी संस्कृति और शिक्षा पर प्रभाव पर केंद्रित है। जिसमे इन्होंने सामाजिक मीडिया में सोशल मीडिया को जनसंचार उपकरण के माध्यम से विविध दर्शकों तक सूचना, विचार, राय आदि भेजने के तकनीकी साधन के रूप में परिभाषित किया है। साथ ही सोशल मीडिया जनजातीय संस्कृति पर प्रभाव तथा शिक्षा पर प्रभाव को भी दर्शया है। शोध के अनुसार वर्त्तमान तकनीकी और मनोवैज्ञानिक युग में, पाठयक्रम संचालन के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान अनुप्रयोग बहुत आवश्यक है।
- लखेंद्र 2014– शोध ''भारत असम के तिनसुकिया जिले में सिंगफो जनजाति की संस्कृति और परंपरा पर मास मीडिया के प्रभाव पर एक अध्ययन'' के शोध में तिनसुकिया जिले के केटेटोंग क्षेत्र में सिंगफो जनजाति संस्कृति और परंपरा पर मास मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए एक शोध किया गया था। शोध करते समय केटेटोंग क्षेत्र में सिंगफो जनजाति संस्कृति और परंपरा पर मास मीडिया के प्रभाव को जानने के लिए एक सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन और कार्यक्रम भी आयोजित किया गया था। सर्वेक्षण और अवलोकनों से कुछ

महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आये। अवलोकन से पता चला कि केटेटोंग क्षेत्र के सिंगफो लोगों की जनसंख्या बहुत कम है और समय के साथ जनजाति में परिवर्तन आये हैं।

- सरकार 2010– सरकार अपनी शोध ''जनजातीय लड़कियों की वस्त्र जागरूकता और खरीदारी प्रथाओं पर शिक्षा और संचार मीडिया का प्रभाव'' में कहती हैं कि "आदिवासी" शब्द आधे भूखे समुदाय को इंगित करता है। शिक्षा और मीडिया सुविधाओं के विकास से आदिवासियों की गहरी सामाजिक–आर्थिका और मनोवैज्ञानिक स्थिति में बहुत बदलाव आए हैं। शिक्ष व्यक्तिगत उपयोग के लिए उपयोगी, कार्यात्मक और आरामदायक कपड़े या परिधान का चयन करने के लिए जगरूकता पैदा की है। संचार मीडिया कपड़ें उद्योग और अंतिम उपभोक्ताओं के बीच सेतु का काम करता है। शोध में इन्होंने आंकडा का विश्लेषण प्रतिशत वितरण, सहसंबध के गुणांक और रैंक भारित औसत को नियोजित करके किया है।

समस्या की जाँच–

झारखण्ड़ में बाहरी तथा गैर आदिवासियों की आबादी में लगातार वृद्धि हो रही है, जिसके कारण इनका प्रभाव आदिवासियों में बढता जा रहा है। संचार मीडिया के प्रभाव के कारण खुरदरा बाजार पर प्रभाव पड़ने लगा है। लोग इंटरनेट द्वारा खरीदारी करना पसंद करने लगे है। जनजातीय पारंपरिक वस्त्रों पर अधुनिकता का प्रभाव।

अध्ययन का उद्देश्य–

- राँची तथा सिमडेगा जिला की जनजातीय किशोरियों के परिधान का अध्ययन करना।
- जनजातीय किशोरियों में परिधान के प्रति जगरूकता को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
- जनजातीय किशोरियों के क्रयशैली को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।

प्रेरणा–

मास मीडिया के प्रभाव, फैशनेबल कपड़ों के प्रति आकर्षण ने किशोरियों अधिक खर्चीला बना दिया है। किशोरियाँ अपने को औरों बेहतर, आकर्षक, सुंदर बनाने की होड़ में लगी हैं। बीते कुछ वर्षों में संचार मीडिया (मास मीडिया) का अत्यधिक उपयोग।

शोध प्रश्न–

- राँची तथा सिमडेगा जिला की जनजातीय किशोरियों किस प्रकार के परिधान पहनना पसंद करती हैं?
- जनजातीय किशोरियों में परिधान के प्रति जगरूकता को प्रभावित करने वाले कारक क्या हैं?
- जनजातीय किशोरियों के क्रयशैली को प्रभावित करने वाले कारक क्या हैं?

अनुसंधान डिजाइन–

अध्ययन प्राथमिक तथा द्वितीयक आंकड़ों के द्वारा किया जाएगा।

शोध क्षेत्र–

शोध के अध्ययन के लिए झारखण्ड राज्य के दो जिला, राँची तथा सिमडेगा जिला के शहरी क्षेत्र तक सीमित होगी।

शोध विधियाँ–

- निरीक्षण
- साक्षात्कार
- अनुसूची

प्रतिदर्श का आकार एवं चयन विधि–

प्रतिदर्श लेने के लिए उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि का उपयोग किया जएगा। इसके लिए दोनों जिला, राँची तथा सिमडेगा के शहरी क्षेत्र से कॉलेज जाने वाली 16 से 21 वर्ष की उम्र की कुल 200 किशोरियों का चुनाव किया जायेगा ।

प्रतिदर्श	राँची शहरी क्षेत्र से प्रतिदर्श की संख्या	सिमडेगा शहरी क्षेत्र से प्रतिदर्श की संख्या	उम्र
कॉलेज जाने वाली किशोरियाँ की संख्या	100	100	16–21

कॉलेज की संख्या– राँची शहरी क्षेत्र से 4 तथा सिमडेगा के शहरी क्षेत्र से 4, कुल 8 कॉलेजों का चयन किया जाएगा। सभी कॉलेजों से 25–25 प्रतिदर्श लिया जायेगा।

क्रम संख्या	राँची शहरी क्षेत्र के कॉलेज	किशेरियों की संख्या	सिमडेगा शहरी क्षेत्र के कॉलेज	किशेरियों की संख्या	उम्र
1	एसएस मेमोरियल कॉलेज, राँची	25	सिमडेगा कॉलेज, सिमडेगा	25	16–21
2	राम लखन सिंह यादव कॉलेज, राँची	25	जेवियर कॉलेज, सिमडेगा	25	16–21
3	जेवियर कॉलेज, राँची	25	गॉसनर कॉलेज, सिमडेगा	25	16–21
4	गॉसनर कॉलेज, राँची	25	एस. के. बागे कॉलेज कोलेबिरा, सिमडेगा	25	16–21

चर–

क्रम संख्या	स्वतंत्र चर	आश्रित चर
1	शिक्षा	परिधान

2	आय	क्रय शैली
3	संचार माध्यम	जागरूकता

शिक्षा– मौसम, स्थान तथा अवसर के अनुकूल परिधान एवं परिधानों के रंगों का चयन करना तथा विभिन्न प्रकार के वस्त्र एवं वस्त्रों की वनावट एंव बुनाई की जानकारी।

आय– परिवारिक आय एवं क्रय शक्ति को दर्शायगी।

संचार माध्यम – टी.बी, इंटरनेट, फिल्म, फोन, समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं। सोशल मीड़िया उभरता हुआ मंच है, जो अक्सर लोगों द्वारा उपयोग किया जाता है।

शोध उपकरण–

- अनुसूची
- पुस्तकालय
- पुराने शोध पत्र
- संस्थान
- संग्रह द्वारा जानकारी एकत्र की जएगी।

प्रतिचयन पद्धति–

शोध अध्ययन के लिए प्रतिदर्शों का चयन एक उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन पद्धति द्वारा किया जाएगा।

अध्ययन क्षेत्र–

प्रस्तुत शोध के लिए झारखण्ड राज्य के राँची तथा सिमडेगा जिला के शहरी क्षेत्रों के कॉलेजों को चुना जाएगा।

अँकड़ा का विश्लेषण एवं व्याख्या–

अँकड़ों का प्रस्तुतीकरण सारणी, प्रतिशत, ग्राफ, एवं अनुकूल संख्यिकीय विधियों द्वारा लिया जाएगा।

अध्ययन का महत्व–

शोध जनजातीय किशोरियों में परिधानों के प्रति जागरूकता और क्रय शैली पर संचार मीडिया का प्रभाव को दर्शाएगी।

अध्ययन की प्रासंगिकता–

वर्त्तमान में जनजातीय किशोरियों में परिधान और क्रय शैली के प्रति जागरूकता, शिक्षा तथा संचार मीडिया प्रभाव की जनकारी प्राप्त होगी। तेजी से फैशन में हो रहे परिवर्तन के कारण जनजातीय बालिकाओं में अपने पारंपरिक परिधानों के प्रति रूझान सिमटती नजर आ रही हैं। यह अध्ययन जनजातीय किशोरियों के परीधान चयन एवं क्रयशौली पर मीडिया के प्रभाव को दर्शाने में योगदान करेगा।

मौजूदा ज्ञान में योगदान –

मेरी जानकारी के अनुसार जनजातीय किशोरियों में परिधान और क्रय शैली के प्रति जागरूकता, संचार मीडिया के प्रभाव के विषय में जनकारी का अभाव है। प्रस्तावित शोध जनजातीय किशोरियों में परिधान और क्रय शैली के प्रति जगरूकता को दर्शाएगी। जनजातीय किशोरियों की मनोस्थिति, समाजिक स्थिति, विचार को सामने लाने में सहायता प्रदान करेगी। कॉलेज जाने वाली जनजातीय किशोरियों के द्वारा परिधान चयन करने, पहनने और खरीदने की तरीकों की जानकारी प्राप्त होगी। संचार मीड़िया के प्रभाव को दर्शाएगी।

सीमाएं –

अनुसंधान अध्ययन राँची तथा सिमडेगा के कॉलेज तक ही सीमित होगी, शोध के लिए सिर्फ 16 से 21 वर्ष की कॉलेज जाने वाली जनजातीय किशोरियों का चयन किया जायेगा।

अध्ययन कार्य–

1)परिचय

2)साहित्य समीक्षा

3)शोध प्रविधि

4) परिणाम एंव विश्लेषण

5) निष्कर्ष एवं सुझाव

- संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रस्तावित शोध विषय के सम्बन्ध में संभावित संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. ज़िक्सिन गाओ 2023, पृष्ठ संख्या–127–132, www.researchgate.net
2. सोनिया हसन, एम फाहद फाहीम और अब्दुल रहमान 2023, पृष्ठ संख्या–15–33 https://www. researchgate.net/publication/37248744
3. परमिता सरकार 2019, पृष्ठ संख्या–1–14 https://www.google.com/url?qhttps://fashioninstitute.mmu.ac.uk/assets/uploads/2019/07
4. डॉली मोगरा और सिम्पल जैन 2018, पृष्ठ संख्या–1–8

   http://krepublishers.com/02-jurnals/S-HCS-HCS-12-0-000-18-Web/HCS-12-1-000-18-Abst-PDF/S-HCS-12-1-2-001-18-317-Mogrs-D-Tx%5B1%5D.pmd.pdf
5. सुरेंद्र पाल और सीमा ऊइकी 2017 पृष्ठ संख्या– 56–64 https://www.amity.edu/gwalior/jcc/pdf-journal-december-2017-56-66.pdf
6. अयूब सइद मियाँ 2017, पृष्ठ संख्या–5–9 http://renupublishers.com/images/article/15152420434.pdf
7. राजू कांबले, एस.एम मालागटि और संतोषकुमार पाटिल 2016, पृष्ठ संख्या–66–67 http://renupublishers.com/images/article/151524417124.pdf
8. शेषकुमार रामचंद्र शर्मा 2016, पृष्ठ संख्या–60–63, http://renupublishers.com/images/article/15152416413
9. बाला लखेंद्र 2014, पृष्ठ संख्या–65–74 https://citeseerx.ist.psu.edu
10. स्मृति रेखा सरकार 2010, पृष्ठ संख्या–285–289, सम्मेलन की कार्यवाही–कागज की किताब 28वाँ द्विवार्षिक सम्मेलन होम साइंस एसोसिएशन ऑफ इंडिया, कोलकाता, 2010